असमिया संस्कृति को समझने के लिए असम की फिल्म दिखाई गई

भास्कर संवाददाता | बालोतरा

शहर के डीआरजे राजकीय कन्या महाविद्यालय में ''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' योजना के अन्तर्गत असमिया फिल्म दिखाई गई। कार्यक्रम अधिकारी डॉ. राजकुमारी ने बताया कि महाविद्यालय में क्लब से जुड़ी छात्राओं द्वारा असमिया गीत ''आसाम देशों चाय के बागाने मांझी कोले, सोना - रूपा रे एवं मोरबई छोरे अली बागाने कम कोरतल गाए गए। इसके पश्चात् छात्राओं को भाषा ज्ञान में तुमार नाम की, तुमि कैसे असा, मोरा भले असु, जैसे छोटे-छोटे वाक्यों को बता कर असमिया भाषा पर चर्चा की गई। इसी कड़ी में छात्राओं को असमिया फिल्म की चर्चा की गई। इसी कड़ी में छात्राओं को असमिया फिल्म ''रिद्म ऑफ लॉइफ'' दिखाई गई, जिसका उद्देश्य छात्राओं को फिल्म द्वारा बताया कि असमिया में कितनी प्रकार की ढोल बजाई जाती है। दुर्गा पूजन, सरस्वती पूजन, बीहू नृत्य, लोकगीत में अलग-अलग प्रकार से ढोल बजाये जाते है, जिसमें 12 बीट्स होती है। इसमें मुख्य खरम डोल, करना डोल, कापी डोल, बीहू डोल, ओजा डोल मुख्य रूप से दर्शाए गए। कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. संजय माथुर ने सभी गतिविधियों के लिये छात्राओं की प्रशंसा की। डॉ. गुलाबदास वैष्णव ने भी छात्राओं को असमिया संस्कृति व लोक नृत्य व गीत के बारे में बताया। कार्यक्रम में सहसंयोजक हेमलता माहवर, पिंकी खोईवाल, डॉ. खगेन्द्र कुमार, कुशाग्रसिंह नेगी उपस्थित रहे।